

"मानस का हंस" उपन्यास का मूल कथानक

'मानस का हंस' सुप्रसिद्ध उपन्यासकार जमूनालाल नागर की एक प्रेरक ऐतिहासिक उपन्यास है जिसे मूल नायक महाकवि प्रोफ़ेसर रामभक्त गोस्वामी तुलसीदास हैं। तुलसीदास ने राम की जो अल्पमूर्ति जनमानस में बनायी वह आज भी विद्यमान और सदैव श्रद्धास्पद है।

इस उपन्यास में तुलसीदास के जीवन संघर्ष को परत-परत-परत बड़े ही मार्मिक एवं विचित्र ढंग से उकेरा गया है। तुलसी का जन्म बहुत ही संकष्टकाल में हुआ। एक और उनके राज के राजा अकबर के ऐजेंटों के द्वारा मारे गये चारों - और 'सैनिधौ' का लौंडा और एही तुलसी की माँ की प्रसव पीड़ा। तुलसी की जन्मकुँडली की पिता ने दोषमुक्त बाला को और उनके मृत माँ की 'सैनिधौ' उरने के पहले ही घर से निकालकर बुढ़ियां त्रिभुगी को दे दिया गया। तुलसी जन्म से ही मनहुस निहले रोज़ भीरु भी इन्हें मला-बुरा कहे बिना नहीं देता। त्रिभुगी बुढ़िया भी मर जाती है और तुलसी विह्वल हो पड़ते हैं। स्वामी देसाय तुलसी की खोज करते और खाने-पूँचते हैं। स्वामी देसाय तुलसी के मंदिर में वहीं इन्हें बाबा नरहरिदास से मुलाकात होती है, जो उन्हें अपना धर्म बनाकर कछी ले जाते हैं।

काशी में तुलसी की मुलाकात कई लोगों से होती है जिनमें शेषनाथ जी महाराज, मेधाभक्त टोटरमल आदि हैं। इन लोगों ने तुलसी का पूरा सहयोग दिया। लेकिन तुलसी की वास्तविक वाचन की प्रसिद्धि से विरोधी गण भी बढ़िके हो गए। तुलसी एक बहुत ही कुशल मविष्यवन्ता और ज्योतिषियों, शम्भूदा ऐसे वाचने थे कि सभी काशी की राजा भक्तमुग्ध हो जाती थी। कई प्रजा लोग इनसे ईर्ष्या करने लगे वे किसी भी तरह से तुलसी को वहीं से जगा देने की प्रयास में रहते थे। इसी बीच तुलसी की शादी एक रत्नावली नाम की कन्या से हुई। अब तुलसी गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते। पत्नी के प्रति उनका आस्थानि बढ़ते ही गया। वे पत्नी को छोड़कर

एक पल के लिए भी वहीं जाना नहीं चाहते थे। उनका एक पुरा तारापतिजी हुआ। उसी-सी तुलसी की प्रसिद्धि बढ़ते जाती थी-यों वे राम मग लेने लगे। इसी बीच कुछ लोगो ने तुलसी के आश्रम के पास देगा डरवा दिया। तुलसी और उनके सखी सहयोगी पड़े गये। किन्तु तुलसी और उनके सखी साथे बिना किसी लुब्धक के दूर गये क्योंकि वही म की इसकी गौर के लिए कुरुवर ने भेजा था।

तुलसी का जीवन मधुर संघर्षमय रहा इसके साथ ही एक विचित्र घटना ने तुलसी गृहस्थ जीवन से विमुख कर दिया। एक बार पत्नी के माचड़े जाने की आग्रह से तुलसी ने उन्हें मैजरी दिया परन्तु स्वयं वे पत्नी-विश्रोग में लड़पड़े और विन बुलाये ही बरसने में के बीच रात में सहजाल पहुँच गये। वही रात से उनकी पत्नी ने उन्हें काफी कहा। इतना ही नहीं वह बोली की आप रात के प्रति प्रेमामय नहीं हैं-यदि के प्रति हैं। तुलसी की वही बात बहुत ही हृदय में चोट पहुँचायी। वे बिना कुछ कहे ही अयोध्या लौट गये। 'राम चरितमानस' की रचना में कर्मरत हो गये। स्वयं के साथ उनका बैठा भी चल बसा। पत्नी तुलसी के साथ रहने की इच्छा जाहिर की लेकिन तुलसी ने पूर्ण राममग हो गये थे। वे कहते हैं-"अब लौ बसाने अब न नखें हैं। परन्तु स्वयं का संतुष्ट मन में पत्नी के मिलने की बात कहकर बिदा दिये।

तुलसी अब पूरी तरह से शक्तित मानस की रचना में लीन हो गये। इधर बुढ़ापा भी उनका साथ देने से डंकार कर दिया। वे बात योग से पीड़ित हो गये। संतुष्ट मन में पत्नी से मिलकर पुनः आशी चले आए। उनकी स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी। स्वयं नहीं ब्रह्म वेला में वे स्वप्न देख रहे हैं कि राम भी इसी विनय प्रविष्ट पर साइन कर रहे हैं और वे मानस की पोकियाँ धीरे-धीरे गुनगुनाते हुए प्राण त्याग देने। वही तुलसी के संघर्षमय जीवन का अंत होता है। सभी साथी भावविह्वल होकर अंतिम विदा करते हैं।